Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language,
Online ISSN 2348-3083, SJ IMPACT FACTOR 2019: 6.251, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, APRIL-MAY, 2021, VOL-9/45

उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि का अध्ययन

प्रियंका कुमारी

शोध अध्येता, जेजेटी विश्वविद्यालय, चुड़ेला, झुंझुनू

Paper Received On: 25 MAY 2021
Peer Reviewed On: 30 MAY 2021
Published On: 1 JUNE 2021

Abstract

मानव व्यवहार के तीन पक्ष यथा– ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक होते है। इन तीनों ही पक्षों के संतुलित विकास पर मानव का अस्तित्व निर्भर होता है। अध्यापन के व्यवसाय को राष्ट्र निर्माण के कार्य से जोड़कर इसे विशेष महत्व दिया गया है क्योंकि अध्यापक ही भावी नागरिकों के चरित्र का निर्माता, मानवीय मूल्यों का निर्धारक और अनुशासन का स्तंभ होता है। कोठारी कमीशन के अनुसार शिक्षा जीवन, समाज और व्यक्तित्व के परिवर्तन का सबसे सशक्त साधन है। शिक्षा ही किसी राष्ट्र के व्यक्तियों के खुशहाल जीवन जीने की सुरक्षा का निर्धारण करती है। वर्तमान अनुसंधान आलेख में उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि का अध्ययन लिया गया है।

मुख्य शब्द : *व्यावसायिक संतुश्टि, अध्यापक, उच्च माध्यमिक विद्यालय।*

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

विशय प्रवेश

प्राचीन समय से ही भारतीय समाज में अध्यापक को भविश्य का निर्माता कहा गया है, क्योंकि अध्यापक जिन बच्चों को आज शिक्षा देते हैं, वे बालक ही कल भविश्य में राश्ट्र के अच्छे नागरिक बनते हैं। आज के वैज्ञानिक युग में व्यवहारगत शिक्षा का शिक्षण पहले के सरल युग की अपेक्षा कहीं अधिक आवश्यक है। अतः व्यवहारिक शिक्षा हेतु शिक्षण कार्य को अच्छी तरह सम्पन्न करने हेतु अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि व समायोजन का अध्ययन करना आवश्यक है, जिससे मस्तिष्क के साथ–साथ संवेगों को परिष्कृत किया जा सके। अध्यापक का पद ईश्वर के समकक्ष बताते हुए एक भारतीय प्रार्थना में कहा है–

गुरूः ब्रह्म, गुरूः विष्णु, गुरूः देवों महे वरा।
गुरूः साक्षात् परब्रह्मः, तस्मै श्री गुरूवेः नमः।।

अर्थात् भारतीय समाज में माने जाने वाले प्रमुख देवता ब्रह्म, विष्णु और महेश, गुरू (अध्यापक) ही है। साक्षात परब्रह्म भी गुरू ही है और उस परम गुरू को नमस्कार करता हूँ।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

प्राचीन काल से ही बालकों के भविष्य निर्माण व चरित्र निर्माण के लिए गुरू की भूमिका को महत्वपूर्ण माना गया है। **फ्रोबेल के अनुसार–** विद्यालय बाग है, छात्र कोमल पौधा है और शिक्षक कुशल माली है। वह अपनी कु ालता से पौधे का सर्वोत्तम और संतुलित रूप से विकास करता है। शिक्षा की गुणवता इस बात पर निर्भर करती है कि उस राष्ट्र के पास किस प्रकार के अध्यापक उपलब्ध हैं। शिक्षण के कार्यक्षेत्र में कार्य संतोष अध्यापक के लिए एक प्रकार की अभिप्रेरणा है, जिसके फलस्वरूप अध्यापक अपना कार्य संपादित करने में आनन्द की अनुभूति करता है। यह कार्य संतोष केवल वैयक्तिक स्तर तक सीमित होता है क्योंकि कार्य संतोष किसी अध्यापक में अंतर्निहित उन सभी मनोवृत्तियों का परिणाम होता है। जिसे एक अध्यापक अपने अध्यापन व्यवसाय के जीवनकाल में बनाए रखने का प्रयास करता है। स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन का विकास होता है।

शोध कार्य का क्षेत्र

21वीं शताब्दी में भौतिकता का अत्यधिक विस्तार होने तथा ज्ञान के क्षेत्र की व्यापकता के कारण शिक्षा में अमूल्य परिवर्तन दिन प्रतिदिन तीव्र गति से हो रहा है। शिक्षकों द्वारा प्रभावी शैक्षिक प्रक्रिया संपादित किए जाने में उनके अनुभव और ज्ञान का महत्वपूर्ण योगदान होता है। शिक्षक अपनी योग्यता तथा विषय–वस्तु के ज्ञान के आधार पर ही शिक्षण कार्य में सफल हो सकता है। कोठारी आयोग ने शिक्षक कार्यक्रम में अलगाव दूर करने के क्रम में जो बिन्दु सुझाए हैं, उनमें उचित समझा कि विद्यालय सुधार कार्यक्रमों के नियोजन और क्रियान्विति में शिक्षकों की व्यावसायिक संतुश्टि का होना आव यक समझा गया है। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा–2005 में भी ज्ञान प्राप्ति में बच्चे द्वारा निभाई जाने वाली भूमिका पर फिर से ज़ोर दिया गया है और सामाजिक–सांस्कृतिक दर्शन में 'ज्ञान का सामाजिक निर्माण' एक महत्वपूर्ण सिद्धांत रहा है। इस दिशा में अध्यापकों के लिए नवीन प्रयोगों व भाोध कार्यो के साथ राश्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिशद् भी अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रही है।

व्यावसायिक संतुश्टि का अर्थ व परिभाशाएं

व्यावसायिक संतुश्टि से तात्पर्य है कि व्यक्ति जिस व्यवसाय में है उसके प्रति उसका दृश्टिकोण क्या है, उसने जो कार्य चुना है उसके प्रति वह पूर्ण रूपेण निश्ठ एवं संतुश्ट है। कार्य संतुष्टि (Job satisfaction) को कई तरह से परिभाषित किया जाता है। कुछ लोग समझते हैं कि कार्य संतुष्टि से यह तात्पर्य है कि कोई व्यक्ति अपने कार्य (जॉब) से कितना संतुष्ट है। अध्यापक ने अध्यापन कार्य अर्थात पढ़ाने का जो कार्य चुना है वह उस व्यवसाय से संतुश्ट है तथा वह वर्तमान दशा में प्रसन्न है। **सिन्हा, डी. व शर्मा, के. सी. के अनुसार –** व्यवसायिक संतुश्टि का संबंध व्यक्ति की नौकरी से है तथा समाज में व नौकरी में सामान्य तालमेल से भी काम का संबंध है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सैय्यद, के. जी. के अनुसार – अध्यापन आज भी अनाकर्शक व्यवसाय है जिसे अधिकतर लोग अन्तिम व्यवसाय के रूप में स्वीकार करते हैं।

अध्यापकों की व्यावसायिक संतुष्टि के निम्न क्षेत्र हैं–

- वेतन और पदोन्नति।
- नौकरी की शर्त व सुरक्षा।
- अपने व्यवसाय व संस्था के प्रति अभिरूचि।
- सहगामी, पाठ्यसहगामी और अन्य क्रियाएं।
- प्रधानाध्यापक, प्रबन्ध समिति व अध्यापकों से संबंध।

अध्यापक यदि अपने व्यवसाय के प्रति उच्च रूचि व सकारात्मक दृष्टिकोण रखता है तो न केवल व अपने कार्य आसानी से पूर्ण कर पायेगा वरन उसे व्यवसायिक संतुष्टि भी प्राप्त होगी। **ब्लूम के अनुसार –** किसी संगठन की प्रभावशीलता की महत्वपूर्ण कसौटी संतुश्टि है अपने व्यवसाय के प्रति संतुश्टि या असंतुश्टि व व्यक्ति के अपने परिकल्पित लक्ष्यों की प्राप्ति, सफलता या असफलता, सकारात्मक या नकारात्मक मूल्यांकन पर निर्भर करती है।

अध्यापन में व्यावसायिक संतुश्टि के आधारभूत बिन्दु है–

1. वेतन, सुरक्षा व पदोन्नति नीति संबंधी संतुश्टि
2. संस्था की योजना व नीतियों से संबंधित संतुश्टि
3. अधिकारियों की कार्यप्रणाली व योग्यता से संबंधित संतुश्टि
4. व्यवसाय व व्यावसायिक परिस्थितियों से संतुश्टि।

हम व्यावसायिक वातावरण में रहते हैं और यह समाज का एक अनिवार्य अंग है। इन्हीं तत्वों से विद्यालय के वातावरण का निर्माण होता है जो कि अध्यापकों की व्यवसायिक संतुष्टि को प्रभावित करते हैं।

प्रस्तावित शोध कार्य की उपादेयता

अध्यापक समाज के कर्णधार हैं। अतः ऐसे शिक्षकों की आव यकता है जो अच्छे कर्णधारों का निर्माण कर सके। इसके लिये आव यक है कि भावी अध्यापकों को उचित प्रि क्षण दिया जाये। उनको सैद्धान्तिक कार्य के साथ व्यावहारिक ज्ञान भी दिया जाना चाहिए। समय के बदलते प्रवाह के साथ–साथ शिक्षक प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, शिक्षण विधियां, भौक्षिक संरचना आदि में वांछित परिवर्तन नहीं किये गये हैं। यही कारण है कि राश्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के बनाने वालों ने समाज में वांछित परिवर्तन लाने हेतु शिक्षक समुदाय पर ही पूर्ण भरोसा करते हुए नई शिक्षा नीति में शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों एवं उसकी गुणवत्ता में मौलिक सुधार की व्यवस्था की है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

प्रस्तुत शोध में शिक्षकों की व्यावसायिक संतुश्टि का लिंग, क्षेत्र, जाति और अनुभव के संदर्भ में अध्ययन किया गया है। इन सभी पहलुओं की दृष्टि से इस अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व सिद्ध होता है। क्योंकि आज इन सभी पहलुओं के संदर्भ में शिक्षकों की व्यावसायिक संतुश्टि को जानना बहुत जरूरी है। क्योंकि इन सभी पहलुओं के शोध के अभाव में अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि की पृष्ठभूमि को ठीक प्रकार से नहीं समझा जा सकता। उपर्युक्त संदर्भो में अध्ययन आदतों के शोध के पश्चात हम शिक्षकों की व्यावसायिक संतुश्टि के विकसित होने वाले कारणों की तह में जा सकते हैं। यह समस्या प्रत्यक्ष व परोक्ष रूप से शिक्षक व्यवसाय से सम्बन्धित है। इससे यह ज्ञात हो सके कि माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक संतुश्टि कैसी हैं? हम इन कारणों की तह में जाकर उपर्युक्त संदर्भों में शिक्षकों की व्यावसायिक संतुश्टि विकसित करने का प्रयास कर सकते हैं। शिक्षण क्षेत्र में विस्तृत शोध कार्य के पश्चात् शिक्षकों की व्यावसायिक संतुश्टि के अध्ययन पर अभी तक कोई शोध कार्य नहीं हुआ। अतः शेखावाटी क्षेत्र में इस समस्या की ओर अभी तक शोधकर्त्ताओं का ध्यान भी नहीं गया है। इसलिए अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि को जानना तथा तथा तदनुरूप सुझाव देना जरुरी है।

समस्या कथन

वर्तमान अनुसंधान कार्य हेतु समस्या को प्रस्तुत शोध विषय ''उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि का अध्ययन'' शीर्षक के रूप में लिया गया है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

शोध विषय की प्रकृति के अनुरूप प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्यों का निर्धारण अग्रांकित प्रकार से किया गया है–

1. शेखावाटी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि के बारे में जानना,
2. उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष व महिला अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि की तुलना करना,
3. शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि में परस्पर तुलना करना,
4. अधिक व कम अध्यापन अनुभवी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि में परस्पर तुलना करना,
5. जाति वर्गानुसार उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि में परस्पर तुलना करना।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

शोध परिकल्पनाएं

शोध विषय की प्रकृति के अनुसार प्रस्तुत अध्ययन की परिकल्पनाओं का निर्धारण अग्रांकित प्रकार से किया गया है—

1. शेखावाटी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष व महिला अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि में में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. अधिक व कम अध्यापन अनुभवी उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. जाति वर्गानुसार उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

समस्या में प्रयुक्त शब्द परिभाषीकरण

1. व्यावसायिक संतुश्टि— व्यावसायिक संतुश्टि किसी व्यक्ति की काम के प्रति धनात्मक या नकारात्मक अभिवृत्ति है। ए. एस. रेबर के अनुसार व्यावसायिक संतुश्टि किसी व्यक्ति की कार्य स्थल के वातावरण से संबंधी आधारभूत कारक है, जिसको व्यक्ति की संवेदनात्मक अभिवृत्ति (Emotional attitude) व मूल्य (Value) प्रभावित करते हैं। इस अध्ययन में व्यावसायिक संतुश्टि के चार पक्ष लिए गए हैं—

(1.) व्यावसायिक स्थिति के अनुसार व्यवसाय व संतुश्टि

(2.) वेतन, सुरक्षा और प्रमोशन संबंधी संतुश्टि

(3.) शिक्षण, प्रशासनिक नीतियों व संगठनात्मक ढ़ाचें से संबंधी संतुश्टि, और

(4.) प्रशासनिक कार्मिकों की कार्य करने की योग्यता व व्यूहरचना संबंधी संतुश्टि।

जनसंख्या व न्यादर्श

यह शोध अध्ययन राजस्थान राज्य के शेखावाटी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित है। विद्यालयों में कार्यरत अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि संबंधी वास्तविक स्थिति को जानकर इन उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की स्थिति व विद्यालय वातावरण में उन्नयन के लिए सुझाव देने तक ही सीमित रहा है, इसका परिसीमन निम्नानुसार किया गया है—

(अ) क्षेत्रवार

यह अनुसंधान कार्य केवल राजस्थान राज्य के शेखावाटी क्षेत्र के भाहरी व ग्रामीण क्षेत्र के राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालयों का चयन किया गया। इस शोध हेतु उच्च माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत विभिन्न जाति वर्ग व अनुभव के महिला व पुरुष शिक्षकों का चयन किया गया।

(ब) कुल न्यादर्श

न्यादर्श का चुनाव शेखावाटी क्षेत्र के तीनों जिलों (सीकर झुन्झुनूं व चूरु) के उच्च माध्यमिक विद्यालयों से किया गया। न्यादर्श में जाति वर्ग, लिंग भेद, क्षेत्र के आधार पर शिक्षकों को सम्मिलित किया गया। इस भाोध हेतु न्यादर्श का चयन यादृच्छिक विधि द्वारा प्रत्येक जिले से 150 और कुल 450 शिक्षकों किया गया।

विधि, प्रविधि व उपकरण

प्रस्तुत शोध कार्य में भाोधार्थी द्वारा शेखावाटी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि का अध्ययन करने के लिए ''सर्वेक्षण विधि'' का चयन किया गया। प्रस्तुत शोध कार्य हेतु चयन समय एवं उपलब्धता को ध्यान में रखते हुए शोधार्थी द्वारा स्वयं व डाक से उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अध्यापकों से संबंधित दत्त संकलन किया गया। इसके साथ ही अवलोकन व साक्षात्कार के माध्यम से भी दत्त इकठ्ठे किये गये थे। शोधार्थी द्वारा वर्तमान शोध के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए दत्त संकलन हेतु प्रमापीकृत व्यावसायिक संतुश्टि मापनी का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकी प्रविधियां

प्रस्तुत भाोध कार्य में दत्त विश्लेषण करने के लिए प्रतिशतता, मध्यमान, मानक विचलन व टी–परीक्षण (t-Test) जैसी सांख्यिकी का उपयोग किया गया।

मुख्य निश्कर्श व सारांश

प्रस्तुत शोधकार्य में दत्तों का विश्लेशण तथा विवेचन करने के पश्चात् कुछ परिणाम सामने आये हैं, जिनके आधार पर निश्कर्श निकाले गये, जो इस प्रकार हैं–

1. सबसे अधिक लगभग 33 प्रतिशत पुरुश अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि के प्रति अभिवृत्ति औसत पायी गयी अर्थात अनुकूल सामान्य अभिवृत्ति पायी गयी।
2. भोखावाटी क्षेत्र में सबसे अधिक 35 प्रतिशत महिला अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि के संबंध में अभिवृत्ति औसत पायी गयी।
3. सबसे अधिक लगभग 34 प्रतिशत अध्यापकों की अभिवृत्ति औसत पायी गयी।
4. सीकर जिले में उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष व महिला अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक पाया है।
5. झुन्झुनूं जिले में उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष व महिला अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक पाया है।
6. चूरु जिले में उच्च माध्यमिक विद्यालयों के पुरूष व महिला अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक पाया है।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

7. शेखावाटी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के महिला व पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि में सार्थक अन्तर है।

8. सीकर जिले में उच्च माध्यमिक विद्यालयों के भाहरी व ग्रामीण अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है।

9. झुन्झुनूं जिले में शहरी व ग्रामीण अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है।

10. चूरु जिले में शहरी व ग्रामीण अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक पाया है।

11. शेखावाटी क्षेत्र के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के शहरी व ग्रामीण अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि में सार्थक अन्तर है।

12. सीकर जिले में अधिक व कम अध्यापन अनुभवी अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है।

13. झुन्झुनूं जिले में अधिक व कम अध्यापन अनुभवी अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है।

14. चूरु जिले में अधिक व कम अध्यापन अनुभवी अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है।

15. शेखावाटी क्षेत्र में प्रत्येक जिलेवार (सीकर, झुन्झुनूं व चूरु) के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के अधिक व कम अध्यापन अनुभवी अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

16. सीकर जिले में सामान्य और आरक्षित जाति के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है।

17. झुन्झुनूं जिले में सामान्य और आरक्षित जाति के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है।

18. चूरु जिले में सामान्य और आरक्षित जाति के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि के संदर्भ में मध्यमान अन्तर सार्थक नहीं पाया है।

19. भोखावाटी क्षेत्र में प्रत्येक जिलेवार (सीकर, झुन्झुनूं व चूरु) के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के सामान्य और आरक्षित जाति अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है।

शोध अध्ययन का प्रभाव

किसी भी अध्ययन का भौक्षिक प्रभाव उसकी सार्थकता का द्योतक होता है। शिक्षा में छात्र, शिक्षक और सामाजिक परिवेश के बीच पारस्परिक क्रिया शामिल है। ये तीनों घटक संपूर्ण शैक्षिक

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

कार्यक्रम की सफलता और विफलता के लिए समान रूप से जिम्मेदार होते हैं। शिक्षार्थी की सफलता मुख्य रूप से शिक्षक की क्षमता पर निर्भर करती है। पूरे शैक्षिक कार्यक्रम को शिक्षक द्वारा नियंत्रित किया जाता है। वर्तमान समय में जिन किशोरों को पारिवारिक संघर्ष का सामना करना पड़ता है, जिसके कारण उनका समायोजन विद्यालय, प्राचार्यों, शिक्षकों एवं अपनी मित्र मंडली एवं अपने आस–पास के वातावरण से उनमें मानसिक तनाव का सामना करना पड़ता है। पारिवारिक संघर्ष के कारण उनमें निराशा, अवसाद सामाजिक अलगाव, विद्यालयों में लगातार असफलता, असहयोग सहानुभूतिपूर्वक वातावरण न मिलना जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। जिसके कारण उनमें कुसमायोजन की स्थिति पैदा हो जाती है। जिससे वे हर क्षेत्र में जैसे शैक्षिक, सामाजिक, संवेगात्मक रूप से पिछड़ने लगते हैं। इन विषम परिस्थितियों में समायोजन ही एक मात्र सफलता का मार्ग प्रशस्त करता है।

भावी शोध हेतु सुझाव

भाोध के उद्दे यानुसार स्थापित निष्कर्ष जहां एक ओर लक्ष्यपरक विशिष्ट सत्य की स्थापना करते हैं, वहीं दूसरी ओर भावी शोध हेतु दिशा भी प्रदान करते हैं। अतः इस दिशा में निम्न शोध कार्य भावी शोध हेतु अपेक्षित है।

1. कार्यक्षमताओं एवं कार्य स्थायित्व के परिप्रेक्ष्य में सेवारत महिला व पुरूष अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि का अध्ययन।
2. महिला एवं पुरूष अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि का विश्लेषणात्मक एवं प्रभावात्मक अध्ययन।
3. माध्यमिक स्तर के हिन्दी माध्यम एवम् अंग्रेजी माध्यम के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि का तुलनात्मक अध्ययन।
4. प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यवसाय संतुष्टि का अध्ययन।
5. राजस्थान में प्राथमिक स्तर के शिक्षकों की व्यवसाय संतुष्टि का अध्ययन।
6. सामान्य एवम् अनुसूचित जाति के अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि का का तुलनात्मक अध्ययन।
7. अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि का उनके व्यक्तित्व, आत्मवि वास एवम् शैक्षणिक उपलब्धियों पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन।
8. राजस्थान में नवनियुक्त अध्यापकों की व्यावसायिक संतुश्टि का अध्ययन।

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

कौल, लोकेश (2009). मेथडालाजी ऑफ एजूकेशनल रिसर्च. नई दिल्लीः विकास पब्लिशिंग हाउस.

सिंह, अरूण कुमार (2006). मनोविज्ञान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियॉं. वाराणसी : मोतीलाल बनारसीदास पब्लिकेशन.

तिवारी, निर्मला (1998). स्टडी ऑफ टीचिंग एप्टीट्यूड, जॉब सैटिसफेक्शन एंड एडजेस्टमेन्ट ऑफ टीचर्स, पीच.डी. थीसिस, बी.आर. अम्बेडकर युनि. आगरा.

भटनागर, सुरेश (2010). शिक्षा मनोविज्ञान. मेरठः आर. लाल बुक डिपो.

पटनायक, एस.पी. और शर्मा, बी. के. (2007). प्राथमिक विद्यालयों के सांगठनिक स्वास्थ्य और शिक्षकों की व्यावसायिक संतुष्टि का अध्ययन. जर्नल ऑफ टीचर एजुकेशन एंड रिसर्च, नोएडा. 2(2), दिसंबर 2007 पीपी.59—66.

राजेश कुमार सिंह व राजेन्द्र कुमार जायसवाल (2006). ने सरकारी एवं निजी संस्थाओं द्वारा संचालित प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की कार्य—संतुष्टि का अध्ययन. भारतीय आधुनिक शिक्षा. जुलाई 2006. http://www.ncert.nic.in/publication/journals/pdf_files/adhunik_shiksha/oct-06/bhartiya_adhunik_july_oct06.pdf

शर्मा, कविता (2017). सेवारत् शिक्षकों की शिक्षण व्यवसाय के प्रति प्रतिबद्धता तथा व्यावसायिक संतुश्टि के संदर्भ में उनके विद्यार्थियों की भौक्षिक उपलब्धि का अध्ययन. International Journal of Education and *Science Research Review. August- 2017, Volume-4, Issue-4. www.ijesrr.org*

सुनील कुमार व नितिन कुमार वर्मा (2015). कानपुर विश्वविद्यालय से सम्बद्ध स्ववित्त एवम् अनुदान प्राप्त शिक्षक—शिक्षा संस्थानों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य—सन्तुष्टि का विश्लेषणात्मक अध्ययन. IRJMST. Vol 6 Issue 12 [Year 2015] ISSN 2250 – 1959 (0nline).

गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता अल्का (2008). उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, यूनिवर्सिटी रोड.

गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, अलका (2007). आधुनिक मापन एवं मूल्यांकन. इलाहाबादः शारदा पुस्तक भवन, यूनिवर्सिटी रोड.

गैरेट, एच. ई. (1981). मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सांख्यिकी. दशम् संस्करण, बाम्बेः बी.एफ. एण्ड संस.

Copyright © 2021, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language